International Journal of
Global Multidisciplinary Research and Analytics

IJGMRA | ISSN (Online): 3107-6483
July-September 2025 | Vol. 01 | Issue 2

Website: www.thearyapublication.com

दीवार में एक खिड़की रहती थी उपन्यास में- खिड़की व हाथी

पवन कुमार पाल*

*शोधार्थी, हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, भारत
ई-मेल palpawankumar66@gmail.com
DOI: **https://doi.org/10.5281/zenodo.17313913**
Accepted on: 23/09/2025 Published on: 10/10/2025

सारांश:

विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओं के शीर्षक ऐसे होते हैं, जो सामान्य जीवन में लगभग सभी लोगों के द्वारा नज़रांदाज़ कर दिए जाते हैं; परंतु लेखक महोदय के पहले उपन्यास के शीर्षक 'नौकर की कमीज' को देखने से मन में एक कौतूहल सी रहती है कि उच्च वर्ग के घरों में नौकर कैसे होते हैं और उनका परिधान क्या होता होगा? 'नौकर की कमीज' उपन्यास में मालिक के द्वारा नौकर के लिए एक कमीज बनवाई जाती है। उस कमीज के खाँचें में जो नौकर फिट बैठेगा वही उनका सबसे अच्छा व ईमानदार नौकर होगा। कमीज एक आदर्श नौकर की पहचान हो गई थी। उनके रहन-सहन, वेशभूषा तथा पहनावे पर कोई ध्यान नहीं देता किन्तु लेखक ने ऐसे शीर्षक का चयन करके पाठक वर्ग के बीच अपने रचना संसार को पढ़ने के प्रति एक जिज्ञासा प्रकट कर दिया है। हाल ही में इनके उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' के लिए इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार सम्मान से सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता के पश्चात वे हिन्दी साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु के बाद के बड़े लेखकों में से एक हैं। इस उपन्यास के केंद्र में एक नव विवाहित दम्पत्ति है। रघुवर प्रसाद इस उपन्यास का मुख्य पात्र है, जो कस्बे के एक महाविद्यालय में गणित विषय के अध्यापक हैं, उनके जीवन का गणित अभी सही प्रकार से सुलझा नहीं है। सोनसी उनकी पूर्णांगनी, इस उपन्यास की अन्य पात्र है जो विवाह के उपरांत अपने पति के पास आती है और घर की गृहस्ती को संभालने का कार्य करती है। इस उपन्यास के शीर्षक की बात करें तो यह शीर्षक लगभग हर घर में है। यहाँ तक कि बिना खिड़की के मकान की कल्पना कर पाना मुमकिन ही नहीं है। इसलिए घर किसका भी हो, कैसा भी हो और कहीं भी हो उस घर में खिड़की का होना अनिवार्य हो जाता है। बहरहाल इस उपन्यास में लेखक ने खिड़की के अंदर के जीवन को जितना बताया है उससे कहीं अधिक उसके बाहर के जीवन पर विस्तार से विस्तारित किया है। लेखक ने खिड़की के बाहर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए वहाँ की पगडंडियों के माध्यम से तालाब-पोखर, नदी, झील, पहाड़, नाना प्रकार के पुष्प,

बादल, चाँदनी रात, पानी पर बादल की छवि का पड़ना, चाँद की आकृति का पानी में उतरना, जुगनुओं को दिखाना तथा पेड़-पौधों का भी चित्रित वर्णन ऐसे किया है जैसे प्रकृति निर्माण के समय ब्रम्हा जी ने स्वयं किया था।

बीज शब्द – रघुवर प्रसाद, खिड़की, हाथी, शांत वातावरण, सूर्योदय, सूर्यास्त तथा भाषा।

खिड़कियाँ मुझे हमेशा से आकर्षित करती रहीं हैं। आज मैं अपने घर में बैठकर यूँ ही पारदर्शी शीशे के माध्यम से खिड़कियों के पास और पार के दृश्य को सहजता से देख पा रहा हूँ। खिड़कियां घर की हों या मन रूपी मस्तिष्क की उन्हें हमेशा खोलकर रखना चाहिए। खिड़कियों का खुलना अंतर्मन का खुलना होता है। नए विचार, सौन्दर्य एवं प्रतीक खिड़कियों के सदृश्य होते हैं। घर की खिड़कियों से चराचर जीवों के आने की संभावना बनी रहती है और मनरूपी खिड़की से नए विचार के। किसी का आना इतना क्रांतिकारी होता है जैसे कि मस्तिष्क में अकस्मात नया विचार या तर्क। दीवार में एक खिड़की रहती थी, में एक विशालकाय हाथी का खिड़की के पार उस वातावरण में ले जाना तो संभव नहीं था तो रघुवर प्रसाद की पत्नी ने कहा कि हाथी नहीं जा सकता तो क्या हाथी जैसे विचार तो आ-जा सकते हैं। मन रूपी खिड़की से हाथी को उस पार तो ले ही जाया जा सकता है। दृष्टांत: खिड़की के बाहर इतना बड़ा हाथी कैसे जाएगा ? पत्नी ने कहा, "खिड़की से हाथी नहीं जा सकेगा।" "हाँ" रघुवर प्रसाद ने कहा। पत्नी ने सुना "मन की खिड़की है। हाथी क्यों नहीं जाएगा।"1

विनोद कुमार शुल्क अपने इस उपन्यास में एक अलग तरह कि भाषा का प्रयोग किया है। भाषा तो वही है बस्स कहने का ढंग कुछ अलग है। भाषा के साथ-साथ एक अलग प्रकार का संवाद का भी प्रयोग किया है। पति-पत्नी के संवाद ना केवल समझने के स्तर पर अपितु एक दूसरे को आंतरिक शांति का अनुभव प्रदान करता है। रघुवर प्रसाद के महाविद्यालय से घर आने का प्रसंग कुछ ऐसा होता है कि पत्नी ने पूछा कुछ और जवाब में सुना कुछ। पत्नी ने पूछा "बस स्टैन्ड से रिक्शे मे आए थे ?" "नहीं पैदल आया था" पत्नी ने सुना कि रघुवर प्रसाद घोड़े पर आए थे। "हाथी नहीं मिला" पत्नी ने पूछा। रघुवर प्रसाद ने सुना कि पत्नी पूछ रही थी कि –रिक्शा नही मिला था ?"
"मिला था पर पैदल आया। पैदल आने से पैसे बच गए थे पास ही बस स्टैन्ड है।"2

पत्नी ने सुना – घोड़े के पैसे नहीं देने पड़े थे। बस स्टैन्ड पास है। आलोचक विष्णु खरे विनोद कुमार शुक्ल की भाषा पर बात करते हुए कहते हैं कि "प्रेमचंद और जैनेन्द्र के बाद इतनी सादा, रोज़मर्रा भाषा में शायद ही किसी और में अभिव्यक्ति की ऐसी क्षमता हो- लेकिन इस उपन्यास में उन्होनें संभाषण की कई भाषाएं और शैलियाँ ईजाद की हैं-

एक वह जिसमें रघुवर प्रसाद लोगों से बोलते हैं, दूसरी वह जिसमें वह खुद से बोलते हैं, तीसरी वह जिसमें रघुवर प्रसाद और सोनसी अपने एकांत में बोलते हैं और चौथी वह जिसमें रघुवर प्रसाद का परिवार आपस में बात करता है, जिसमें हल्की-सी आंचलिकता मिली हुई है, और पाँचवीं वह जिसमें विभागाध्यक्ष और प्राचार्य बोलते हैं- सबसे 'ठेठ' वही है। एक और अद्भुत भाषा वह है जिसमें बोलने वाला और सुनने वाला बारी-बारी कहते कुछ हैं और सुनते कुछ और हैं और यह एक और ही अर्थबाहुल्य स्निग्धता को जन्म देता है।"3

इस उपन्यास में एक अलग प्रकार के शांत वातावरण का जिक्र है। नदी में प्रवाहित होने वाले पानी की ध्वनि, पानी का कल-कल बहना, रात्रि के अंधकार में जुगनुओं, झींगुर, सरोवर में ठहरे हुए जल की शांति, पत्तियों पर पड़ते कदमों के आहट तथा उस सम्पूर्ण वातावरण में शांति की अनुभूति का वर्णन। पौ फटने के साथ ही आस पास के वृक्षों पर पत्तियों के हरहराने की आवाज में चिड़ियों के चहचहाने की आवाज का सुनाई देना सुखद शांति का प्रतीक है। दृष्टांत: "गहरी रात की शांति थी। इस शांति में सबकी अलग-अलग शांति थी। जैसे पीपल के पेड़ के नीचे पीपल की शांति थी। अनजाने पेड़ों के नीचे से वे गुजरे इस पेड़ के नीचे अनजान पेड़ों की शांति थी। पेड़ों, तालाबों, चट्टानों, के प्रत्येक एकांत में सुनाई दे रहा था। ऐसा था कि ये दोनों जागे थे और सबकुछ नींद में झूम रहा था। पेड़ नींद में पेड़ थे। तालाब नींद में तालाब था। आकाश नींद का आकाश था। पक्षी नींद के पक्षी थे। वातावरण नींदमय था।"4

इस उपन्यास में मदद करने के भाव को ऐसे दिखाया गया है जिसके केंद्र में इंसानियत या मानवता को रखा जा रहा है। व्यक्ति एक दूसरे को नहीं जानते हैं मुसीबत के समय मदद करने के लिए हाथ बढ़ाने को जानते हैं बेशक वह किसी भी जाति, धर्म, पंथ, संप्रदाय का हो। दृष्टांत विभागाध्यक्ष ने आवाज दी। रघुवर प्रसाद, रघुवर प्रसाद। रघुवर प्रसाद ने आवाज नहीं सुनी। "पास एक आदमी जा रहा था वह समझ गया था कि दौड़ने वाले को आवाज दी जा रही है। न तो वह रघुवर प्रसाद को जानता था न विभागाध्यक्ष को। सहायता की दृष्टि से उसने रघुवर प्रसाद से कहा , रघुवर प्रसाद।"5 इसी सहायता के पक्ष को उन्होंने अपनी कविता 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' में निःस्वार्थ भाव से मदद करने के भाव को दिखाया है।

इस उपन्यास में दर्शन की बात बड़े सूक्ष्म तरीके से की गयी है। एक पंक्ति में जीवन दर्शन की व्याख्या की गई है। "जीवित आँख से मृत्यु नहीं जीवन दिखता है।"6 अर्थात व्यक्ति की मृत्यु होने पर ही उसकी आँखें सदैव के लिए बंद हो जाती हैं। इसलिए मरने के पश्चात उसे इस सांसारिक जीवन का कुछ भी नहीं पता होता। इसी उपन्यास में प्रेमचंद

की कहानी 'ईदगाह' में जब हामिद मेला जाता है तो वह वहाँ बहुत सी चीजें पहली बार देखता है तो उसका मन सभी को लेने के लिए लालायित हो जाता है; परंतु उसके पास तो कुल तीन पैसे थे। उन पैसों से वह अपनी बूढ़ी दादी के लिए चिमटा खरीद लेता है। उसी कहानी के तर्ज पर यहाँ छोटू (रघुवर प्रसाद का छोटा भाई है) उसके मन में मिठाई खाने को लेकर लालसा है जब उसे मिठाई खाने को नहीं मिलती तो वह सोचता है कि कम-से-कम मिठाई दिख जाए तो भी उसकी इच्छा पूर्ण हो जाएगी। वह सोचता है कि संसार में यदि वस्तुओं को देख लेने से उसे प्राप्त हो जाने का भाव हो जाता तो इस सृष्टि में कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं होता। किसी के प्रति किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता। दृष्टांत "छोटू जान गया था। देख लेने से वस्तुओं को पा जाने का सुख मिल जाता तो कितना अच्छा होता। मिठाई को देखते ही खाने का सुख। ऐसा होता तो दिखने के लिए थोड़ी चीजें होतीं और सबकी जरूरत पूरी हो जाती।"7

महाविद्यालय जाने के लिए रघुवर प्रसाद के पास विकल्प हैं जैसे कि साइकिल, टैम्पों आदि इसके बावजूद वे हाथी से महाविद्यालय जाना मुनासिब समझते हैं। आदमी और आदमी, पशु और आदमी के बीच ऐसे संबंध को धरातल पर यथार्थ होता दिखाया गया है। प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' में पशुवत प्रेम को सस्नेह प्रकट किया है। लेखक महोदय ने इस उपन्यास में रघुवर प्रसाद के एक कमरे के संसार को बड़े सूक्ष्म तरीके से दिखया है जिसमें वे प्रदर्शन व दिखावे से बचते हुए पति-पत्नी के संबंधों को ऐंद्रिकता, मांसलता, रति और श्रृंगार को ऐसे चित्रित किया है कि जैसे उनका वर्णन नितांत आवश्यक व स्वाभाविक है। इस उपन्यास को पढ़ते समय कभी भी नहीं लगा कि इसमें कोई चरित्र व घटना को जबरदस्ती ठूँसा गया है। इनके बिना यह उपन्यास अधूरा, अविश्वसनीय एवं विंध्य होता। हाथी का मालिक साधू एक दिन अपने जाने को लेकर रघुवर प्रसाद से कहते हैं कि मैं किसी दिन अचानक से चला जाऊँगा। अब रघुवर प्रसाद के मन में बेचैनी हो गई कि वह कहाँ जाने की बात कर रहा है और चला गया तो इस हाथी की देखभाल कौन करेगा? इसकी चर्चा उसने अपनी पत्नी सोनसी से की फिर भी उसका संशय बना रहा। पत्नी ने कहा कि हाथी की देखभाल में क्या रखा है, पेड़ से कुछ पत्तियां तोड़ ली और दो बाल्टी पानी पीने को दे दो हो गई देखभाल; पर यह सब इतना आसान नहीं था। क्योंकि हाथी के दर्शन तो सभी करना चाहते हैं परंतु उसको किसी के घर के सामने नहीं बांध सकते क्योंकि आने जाने वाले चार लोग चार प्रकार की बात करते हैं। रघुवर प्रसाद कहता है कि कोई और पक्षी या पशु हो तो उसको पाला भी जा सकता है किन्तु हाथी तो एक विशालकाय पशु है और यह

ठहरने के लिए अधिक जगह भी घेरता है। अच्छा, तोता क्या बारे में क्या ख्याल है? "तोते की देखभाल में ज्यादा खर्च नहीं है। उसे एक कौर दाल-भात सुबह और शाम चाहिए। कभी हरी मिर्च, कभी चना । तोता जगह भी नहीं घेरता। थोड़ी सी जगह चाहिए। तोता से खतरा भी नहीं हैं । सभी तोते काटते नही। पिंजड़ा खोल दो तो बाहर घूमता फिरता है और थककर पिंजड़े में लौट आता है। पिंजड़े में बिल्ली से सुरक्षित रहता है।8 अच्छा, कुत्ता के बारे में क्या ख्याल है? "कुत्ता पालतू होता है। जल्दी घुल-मिल जाता है। जिसके घर में रहेगा, उस घर की देखरेख करेगा। चोर आएगा तो भौंकेगा। कुत्ते के रहने से सहारा हो जाता है। बासी भात से उसका पेट भर जाता है। घर के कोने में पड़ा रहता है। घर में जगह नहीं होती तो बाहर पड़ा रहता है।"9 अच्छा, गाय के बारे में क्या ख्याल है? गाय को तो पाला जा सकता है। यात्रा में मिट्ठू को लेकर जाया जा सकता है परंतु गाय को नहीं। यदि आपके पड़ोसी कहीं यात्रा पर जा रहें हैं उनके पास एक नेवला है वे आपको उसकी देखभाल के लिए दें तो क्या आप उसको रख लेंगे रघुवर प्रसाद ने तुरंत कहा कि 'नहीं'। और यदि गाय हो तो ? 'हाँ' उसको रख लूँगा क्योंकि वह दूध देती है और मैं एक गाय लेने कि सोच भी रहा हूँ। और यदि बैल हो तो उसको रखने से मना कर देते हैं क्योंकि बैल को खाने के लिए भूसा देना पड़ता और उससे काम भी क्या लेना। ऐसे ही तर्कों का शिलशिला चलता रहता है जिसमें रघुवर प्रसाद स्वयं ही फंसते दिखाई पड़ते हैं ।

मातृत्व व वात्सल्य का ऐसा मोनारम व हृदयस्पर्शी चित्रण है इस उपन्यास का एक चरित्र चाय बनाने वाली बुढ़िया है जो सोनसी को सोने के कंगन दे देती है। सोनसी व रघुवर प्रसाद को समयानुकूल डाँट-डपट देती है जैसे वे दोनों जब रात्रि में स्नान कर रहे होते हैं तो सरोवर से जल्दी बाहर निकलने का आदेश दे देती है। वह सुबह भोर में ही सूर्योदय होने से पहले गली में झाड़ू लगा देती थी अपने आसपास के क्षेत्र की सफाई वह स्वयं करती थी। इस कार्य में यदा कदा सोनसी उसका हाथ बटा लेती थी। अंततः यह उपन्यास अपने आप में आंचलिकता को समेटे हुए कथा, संवाद, भाषा, पात्रों व खिड़की के माध्यम से उस पार के दृश्य का बखूबी व विस्तार से वर्णन अद्भुत है।

संदर्भ:

- शुक्ल, वी. के. (2014). नौकर की कमीज. राजकमल प्रकाशन प्र. लि.
- शुक्ल, वी. के. (2024). दीवार में एक खिड़की रहती थी. वाणी प्रकाशन.
- आइबिद, 52
- आइबिद, 34

- आइबिद, 67
- आइबिद, 112
- आइबिद, 75
- आइबिद, 73
- आइबिद, 97
- आइबिद, 97